UNIVERSITY NEWS 08 OCTOBER 2025

AMAR UJALA PAGE NO 2

खून में लैक्टेट थकान का नहीं जिम्मेवार, सेहत की है पहचान

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। खून में पाए जाने वाले लैक्टेट को अभी तक मांसपेशियों की थकान का दोषी माना जाता रहा है। अब लखनऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. नेहा साहू और उनकी टीम की शोध में खुलासा हुआ है कि लैक्टेट की संतुलित मात्रा शरीर को ऊर्जा देने, मस्तिष्क की रक्षा करने और रोगों से लड़ने में भी अहम भूमिका निभाता है।

डॉ. नेहा साहू

इस शोध में डॉ. नेहा के अलावा अमेरिका, साउदी अरब, मलेशिया के वैज्ञानिकों ने मिलकर काम किया। अंतरराष्ट्रीय जर्नल फ्रंटियर इन फिजियोलॉजी ने इसे प्रमुखता से प्रकाशित किया है। डॉ. नेहा साहू का कहना है कि लैक्टेट अब सिर्फ थकान का संकेत नहीं, बल्कि शरीर का मैसेंजर है, जो मेटाबॉलिज्म, मस्तिष्क व आंतों के बैक्टीरिया को आपस में जोड़ता है।

लविवि की डॉ. नेहा साहू के शोध को अंतरराष्ट्रीय जर्नल ने किया प्रकाशित

- एसिड की तरह काम है काम : लैक्टेट इथल एसिड की तरह काम करता है। किन्हीं कारणों से जब यह ज्यादा बनता है तो कैंसर और स्ट्रोक जैसी बीमारियों को बढ़ावा दे सकता है, लेकिन संतुलित मात्रा में यह मस्तिष्क की सुरक्षा करता है, ऐसे प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और शरीर को अधिक सहनशील बनाता है।
- लैक्टेट को खराब ऊर्जा कहने में अच्छे बैक्टीरिया : शोध में पता चला है कि आंतों में रहने वाले कुछ अच्छे बैक्टीरिया लैक्टेट खराब ऊर्जा बनते हैं, जिससे पाचन और रोग प्रतिरोधक क्षमता दोनों में सुधार होता है। डॉ. नेहा का कहना है कि संतुलित लैक्टेट को अच्छा या अच्छा कहा जा सकता है, जो कैंसर, संक्रमण और मेटाबॉलिक रोगों के इलाज की दिशा बदल सकता है।

AMAR UJALA PAGE NO 5

एलयू में स्वदेशी उत्पादों की प्रदर्शनी कल से

लखनऊ। स्थानीय उद्यमियों और कारीगरों को सीधे बाजार से जोड़ने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर में यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो-2025 के तहत 10 दिवसीय स्वदेशी मेला लगेगा। मेला नौ अक्टूबर से शुरू होकर दस दिन चलेगा। जिला प्रशासन की ओर से आयोजित इस मेले में उद्योग विभाग, खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड, माटी कला बोर्ड, हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग विभाग, रेशम विभाग, ग्रामीण आजीविका मिशन, सीएम युवा, ओडीओपी, विश्वकर्मा श्रमसम्मान योजना, पीएमईजीपी और मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना के लाभार्थी शामिल होंगे। मेले में स्वयं सहायता समूहों और एमएसएमई के अन्य उत्पादकों के चिकनकारी और जरी-जरदोजी, फूड प्रोसेसिंग उत्पाद, सजावट आदि उत्पाद उपलब्ध होंगे। (माई सिटी रिपोर्टर)

AMAR UJALA PAGE NO 7

नवंबर में सम्मेलन में जुटेंगे 400 वैज्ञानिक

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में जैव रसायन विभाग की ओर से 13 से 15 नवंबर के बीच अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन- 'बीआईआरटीएच-2025' आयोजित करेगा। इसमें देश-विदेश के 400 से अधिक वैज्ञानिक ट्रांसलेशनल हेल्थ, कैंसर, संक्रामक रोग और भारतीय चिकित्सा प्रणालियों पर चर्चा करेंगे। इसमें डब्ल्यूएचओ से जुड़े एवं वैज्ञानिक पद्मश्री प्रो. एपी. दाश मुख्य अतिथि होंगे। कुलपति प्रो. मनुका खन्ना ने कहा कि यह आयोजन वैज्ञानिक सहयोग और युवा शोधकर्ताओं को प्रोत्साहन देने की दिशा में अहम कदम होगा। (माई सिटी रिपोर्टर)

HINDUSTAN PAGE NO 8

जो थकाने की वजह था अब कैंसर के इलाज में मददगार

शोध

- एलयू की छात्रा समेत अन्य ने किया शोध
- थकान का उप-उत्पाद माना जाता है लैक्टेट

लखनऊ, संवाददाता। अब तक जिसे केवल मांसपेशियों की थकान का उप-उत्पाद माना जाता था, वह लैक्टेट अब मानव स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण नियंत्रक अणु बनकर उभरा है। एक अंतरराष्ट्रीय सहयोगी शोध में बताया गया है कि लैक्टेट न सिर्फ मेटाबॉलिज्म बल्कि हमारी इम्यूनिटी और मस्तिष्क क्रिया को भी नियंत्रित करता है। यह निष्कर्ष 'मानव स्वास्थ्य और रोगों में लैक्टेट की दोहरी भूमिका' विषय पर किए गए शोध में सामने आया है।

ये शोध एलयू के वनस्पति विज्ञान विभाग की डॉ. नेहा साहू समेत एमोरी यूनिवर्सिटी अमेरिका के डॉ. सुधीर कुमार, इमाम मोहम्मद इब्न सऊद इस्लामिक यूनिवर्सिटी सऊदी के डॉ. तल्हा जावेद, यूनिवर्सिटी टेक्नोलॉजी मारा मलेशिया के डॉ. हनीश सिंह जयसिंह चेल्लमल व हार्वड मेडिकल स्कूल अमेरिका के डॉ. प्रभात उपाध्याय की टीम ने किया है। इसे फ्रंटियर्स इन फिजियोलॉजी ने प्रकाशित किया। डॉ. नेहा ने बताया कि लैक्टेट अब केवल थकी मांसपेशियों का संकेत नहीं रहा।

एलयू में इंटरनेशनल ट्रेड शो की तरह लगेगा मेला

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो 2025 की तरह स्वदेशी मेले का आयोजन किया जाएगा। नौ से 18 अक्टूबर तक चलने वाले इस मेले के जरिए स्थानीय स्तर पर हस्तशिल्पियों, कारीगरों और उद्यमियों के स्वदेशी उत्पादों को खरीदने का मौका मिलेगा। जिससे आम लोगों को दीपावली महापर्व के तहत जीएसटी बचत उत्सव में खरीदारी का अवसर प्राप्त हो सके।

TOI PAGE NO 2

LU dept to host global meet in Nov

Lucknow: Department of biochemistry in Lucknow University will organise international conference on bridging innovative research in translational and interventional health (BIRTH-2025) from Nov 13 to Nov 15, aimed at fostering international collaborations and promoting cutting-edge research in areas such as haemoglobinopathies, cancer biology, infectious diseases, neurological and metabolic disorders and Indian knowledge systems.

DAINIK JAGRAN PAGE NO 32

कैंसर का भी संकेत देगा लैक्टेट एसिड

जागरण संवाददाता • लखनऊ : अभी तक केवल मांसपेशियों की थकान का संकेतक समझे जाने वाला लैक्टेट एसिड अब मानव स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण नियंत्रक अणु बनकर उभरा है। एक अंतरराष्ट्रीय सहयोगी शोध में पाया गया है कि यह कैंसर की प्रारंभिक अवस्था का संकेत देने, रोग प्रतिरोधक क्षमता और हमारे शरीर के अच्छे बैक्टीरिया को बढ़ाने में भी मददगार है। यह एक सिग्नलिंग मालीक्यूल है जो मेटाबालिज्म, रोग प्रतिरोधक प्रणाली, मस्तिष्क क्रिया और आंतों की सूक्ष्मजीव-समुदाय को आपस में जोड़ता भी है। लखनऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डा. नेहा साहू, एमोरी यूनिवर्सिटी (अमेरिका) के डा. सुधीर कुमार, इमाम मोहम्मद इब्न सऊद इस्लामिक यूनिवर्सिटी (सऊदी अरब) के डा. तल्हा जावेद, यूनिवर्सिटी टेक्नोलाजी मारा (मलेशिया) के डा. हनीश सिंह जयसिंह चेल्लमल तथा हार्वर्ड मेडिकल स्कूल (अमेरिका) के डा. प्रभात उपाध्याय (संपर्क लेखक) की टीम की ओर से एक शोध समीक्षा में यह तथ्य सामने आए हैं जो हाल ही में फ्रंटियर्स इन फिजियोलाजी जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

• लवि के वनस्पति विज्ञान विभाग की ओर से किए गए शोध में दी गई जानकारी

डा.नेहा साहू

डा. नेहा साहू के अनुसार मानव स्वास्थ्य और रोगों में लैक्टेट की दोहरी भूमिका विषय पर हुई शोध समीक्षा में बताया गया है कि लैक्टेट एसिड अब केवल थकी हुई मांसपेशियों का संकेत नहीं रहा। यह एक ऐसा अणु है जो शरीर के मेटाबालिज्म, रोग प्रतिरोधक क्षमता, मस्तिष्क क्रिया और यहां तक कि हमारी आंतों के अच्छे बैक्टीरिया को भी जोड़ता है। वारवर्ग इफेक्ट के तहत यही अणु जो कैंसर कोशिकाओं को ऊर्जा देता है, नियंत्रित मात्रा में यही अणु मस्तिष्क की रक्षा, प्रतिरक्षा को सशक्त और शारीरिक क्षमता को बेहतर बनाता है। यह शोध लैक्टेट को एक आशा के अणु के रूप में प्रस्तुत करता है। अधिक मात्रा में यह हानिकारक हो सकता है, लेकिन संतुलन में यह कैंसर, संक्रमण, चयापचय (मेटाबालिक) और तंत्रिका संबंधी रोगों के इलाज की नई संभावनाएं खोल सकता है।

क्या होता है लैक्टेट एसिड : लैक्टेट एसिड हमारे शरीर में बनता है, खासकर जब हम व्यायाम करते हैं या अधिक शारीरिक गतिविधि करते हैं। मांसपेशियों में इसके जमा होने से थकावट और दर्द होता है। यह आक्सीजन की कमी होने पर भी मांसपेशियों में बनता है।

DAINIK JAGRAN PAGE NO 36

लवि में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 13 नवंबर से

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के जैव रसायन विभाग की ओर से तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'ब्रिजिंग इनोवेटिव रिसर्च इन ट्रांसलेशनल एंड इंटरवेंशनल हेल्थ' (बर्थ-2025) विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 13 से 15 नवंबर तक होगा। विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर सुधीर मेहरोत्रा ने बताया कि इसमें विश्व भर के प्रमुख विज्ञानी, शिक्षाविद और उद्योग विशेषज्ञ शामिल होकर हीमोग्लोबिनोपैथी, कैंसर जीव विज्ञान, संक्रामक रोग, न्यूरोलाजिकल, मेटाबालिक विकारों, और भारतीय ज्ञान प्रणालियों के क्षेत्र में किए जा रहे ट्रांसलेशनल प्रयासों पर चर्चा करेंगे। इसमें 400 से. अधिक प्रतिनिधि अपने शोध परिणाम प्रस्तुत करेंगे। (जासं)

विद्यार्थियों को कराया भ्रमण

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट आफ वाइल्डलाइफ साइंसेज, उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड और अवध वन प्रभाग के सहयोग से आयोजित विश्व वन्यजीव सप्ताह पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन मंगलवार को विद्यार्थियों के लिए कुकरैल आरक्षित वन, लखनऊ में क्षेत्र भ्रमण कराया गया। विद्यार्थियों ने पक्षियों और तितलियों को देखा और जैवविविधता के बारे में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया। इसके बाद इंस्टीट्यूट आफ वाइल्डलाइफ साइंसेज में दो आनलाइन व एक आफलाइन व्याख्यान भी हुआ। इस अवसर पर समन्वयक प्रो. अमिता कनौजिया, डा. शिवानी कश्यप, डा. मनीषा व विनीता तिवारी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। (प्रे.)

AMRIT VICHAR PAGE NO 5

खोज लखनऊ विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ. नेहा साहू की अगुवाई किया गया शोध

थकान से जमा लैक्टेट में कैंसर के इलाज की संभावनाएं

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- लैक्टेट हृदय रोग से सुरक्षा तो कैंसर कोशिकाओं की करता है मदद

अमृत विचार : अत्यधिक थकान में मांसपेशियों में जमा होने वाले लैक्टेट में कैंसर के इलाज की संभावनाएं छिपी हैं। लैक्टेट रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के साथ मस्तिष्क के लिए सुरक्षा कवच भी बनाता है, लेकिन कैंसर और स्ट्रोक को बढ़ावा देता है। ये आश्चर्यजनक परिणाम आए लखनऊ विश्वविद्यालय की वनस्पति विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. नेहा साहू के शोध में सामने आए हैं। साहू के अनुसार लैक्टेट में कैंसर के खिलाफ लड़ाई के सूत्र भी छिपे हुए हैं। लैक्टेट के साथ क्रिया करने वाले एंजाइम्स का अध्ययन करना होगा, ये कैंसर कोशिकाओं को मिलने वाले पोषण को रोक सकते हैं।

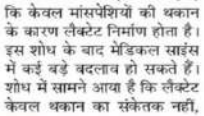

Lactic acid Lactate

लैक्टेट की वैज्ञानिक संरचना

अभी तक ये समझा जाता रहा है कि केवल मांसपेशियों की थकान के कारण लैक्टेट निर्माण होता है। इस शोध के बाद मेडिकल साइंस में कई बड़े बदलाव हो सकते हैं। शोध में सामने आया है कि लैक्टेट केवल थकान का संकेतक नहीं, बल्कि एक सिग्नलिंग मॉलीक्यूल है। ये मेटाबॉलिज्म, रोग प्रतिरोधक प्रणाली, मस्तिष्क क्रिया और आंतों की सूक्ष्मजीव समुदाय (गट माइक्रोबायोटा) को आपस में जोड़ता है। इस अध्ययन की सबसे खास बात है लैक्टेट के विरोधाभासी गुणों पर किया गया खुलासा। एक ओर यह कैंसर और स्ट्रोक जैसी बीमारियों को बढ़ावा देता है, वहीं नियंत्रित स्तरों पर यह मस्तिष्क की रक्षा करता है, प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है और सहनशक्ति बढ़ाता है।

कैंसर चिकित्सा के लिए उम्मीद

- डॉ. नेहा साहू ने बताया कि वॉरबर्ग इफेक्ट के तहत लैक्टेट अणु कैंसर कोशिकाओं को ऊर्जा देता है। नियंत्रित मात्रा में वही अणु मस्तिष्क की रक्षा, प्रतिरक्षा को सशक्त और शारीरिक क्षमता को बेहतर बनाता है। आंतों में लैक्टेट का उपभोग करने वाले गट बैक्टीरिया स्वास्थ्य को सुधारने के लिए प्रोबायोटिक और आहार संबंधी नए उपायों का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। यह शोध लैक्टेट को एक "आशा के अणु" के रूप में देखता है जिसमें अधिक मात्रा में यह हानिकारक है तो संतुलन में यह कैंसर, संक्रमण, चयापचय (मेटाबॉलिक) और तंत्रिका संबंधी रोगों के इलाज की नई संभावनाएँ खोल सकता है।

प्रोफेसर डॉ. नेहा साहू

शोध में इन्होंने लिया हिस्सा

- एमोरी यूनिवर्सिटी (अमेरिका) के डॉ. सुधीर कुमार, लखनऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. नेहा साहू, इमाम मोहम्मद इब्न सऊद इस्लामिक यूनिवर्सिटी (सऊदी अरब) के डॉ. तल्हा जावेद, यूनिवर्सिटी टेक्नोलॉजी मारा (मलेशिया) के डॉ. हनीश सिंह जयसिंह चेल्लमल और हार्वर्ड मेडिकल स्कूल (अमेरिका) के डॉ. प्रभात उपाध्याय (संपर्क लेखक) की टीम का समीक्षा शोध फ्रंटियर्स ऑफ फिजियोलॉजी में प्रकाशित हुआ है। जिसका शीर्षक है ड्यूल रोल ऑफ लैक्टेट इन ह्यूमन हेल्थ एंड डीसीज।